पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 16.09.2022 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर

संगीत संध्या

एक शाम ऋषि दयानंद के नाम

मंगलवार 25 अक्टूबर 2022,

शाम 4 से रात्रि 8 बजे तक

स्थानः आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार, दिल्ली

साथियों सहित सपरिवार पहुंचे

– अनिल आर्य

वर्ष-39 अंक-08 आश्विन-2079 दयानन्दाब्द 199 16 सितम्बर से 30 सितम्बर 2022 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.09.2022, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 443वां वेबिनार सम्पन्न

'हिन्दी दिवस' पर गोष्ठी सम्पन्न

हिन्दी को मिलावट से बचाना होगा —दर्शनाचार्या विमलेश बंसल
हिन्दी पर गौरव करना सीखे —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बुधवार 14 सितम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'हिन्दी दिवस' पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 443वां वेबिनार था। उल्लेखनीय है कि 14 सितम्बर 1949 को सविधान सभा ने राष्ट्र भाषा स्वीकार किया था। वैदिक प्रवक्ता दर्शनाचार्या विमलेश बंसल आर्या ने कहा कि हिन्दी में अन्य भाषाओं की मिलावट चिन्ताजनक है इससे हिन्दी खिचड़ी बनकर अपना वास्तविक स्वरूप खोती जाती है। उन्होंने कहा कि भारत के स्वाभिमान के प्रतीक हिंदी जिसे माथे की बिंदी भी कहा जाता है, आज उर्दू वा अंग्रेजी के भीषण संक्रमण का शिकार हो रही है। विदेशी आयातित भाषाओं की घुसपैठ इस स्तर पर पहुंच गई है कि हम भारतीय भी यह पहिचानने में विस्मृत हो जाते हैं कि यह शब्द उर्दू का है या अंग्रेजी का है, मुगलों वा अंग्रजों की पराधीनता की प्रतीक उर्दू वा अंग्रेजी के इन शब्दों को चुन चुन कर हमें वाणी और लेखनी से बाहर फेंकना होगा, तभी हमारा हिंदी दिवस मनाना सार्थक होगा। यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि स्वाधीनता के अमृत काल तक भी हम राष्ट्र भाषा का सम्मान नहीं दिला पाए। स्वभाषा के बिना स्वाधीनता अधूरी है, राष्ट्र गूंगा है। मात्र एक दिवस ही नहीं पूरे 365 दिन हिंदी को स्वाभिमान के साथ लिखने पढ़ने और बोलने का उपक्रम करना होगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हिन्दी बोलने लिखने में हमे गौरव का अनुभव करना चाहिए। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने भारत को जोड़ने की दूरदर्शिता को बहुत पहले समझा और गुजराती होते हुए भी अपना सब साहित्य हिन्दी मे ही लिखा। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री कृष्णा पाहुजा व अध्यक्ष कवियित्री डॉ. रीता जयहिन्द ने भी कहा कि हिन्दी देश को जोड़ने का कार्य करती है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि माँ तो माँ ही होती है हमे दैनिक जीवन में हिंदी मे अधिकाधिक कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए। गायिका प्रतिभा कटारिया, जनक अरोड़ा, कमलेश मोंगा (नैरोबी), कुसुम भंडारी, सुदर्शन चौधरी, शोभा बत्रा, पिंकी आर्य, ईश्वर देवी, सुनीता अरोड़ा, आशा आर्या, कृष्णा गांधी आदि ने मधुर गीत सुनाए।

'राष्ट्र वंदना' पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

अखण्ड भारत का संकल्प ही राष्ट्र वंदना——डॉ.नरेंद्र आहूजा विवेक

शुक्रवार 2 सितम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'राष्ट्र वंदना' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 438वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ. नरेंद्र आहूजा विवेक (राष्ट्रीय बोधिकाध्यक्ष केंद्रीय आर्य युवक परिषद) व (पूर्व राज्य औषधि नियन्त्रक हरियाणा) ने अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त के मन्त्र का उद्धरण देते हुए कहा कि हमारा राष्ट्र ऋषियों की दीक्षा एवं तप की उतपत्ति है। हमारे राष्ट्र की पुरातन सनातन संस्कृति वैदिक संस्कृति है। यह वेद वाणी ईश्वर की वाणी कल्याणी वाणी है और ऋषि मुनियों ने लोक कल्याण की भावना से अपने तप और दीक्षा द्वारा इस राष्ट्र का निर्माण किया। इस राष्ट्र माता की वंदना के लिए हमें अपने अखंड भारत का संकल्प लेना होगा।अखंड भारत का निर्माण सम्राट चन्द्र गुप्त मौर्य ने अपने आचार्य चाणक्य के मार्गदर्शन में किया। इसमें आज के अफगानिस्तान पाकिस्तान पाक अधिकृत कश्मीर अक्साई चिन तिब्बत भूटान सिक्किम बंगलादेश बर्मा श्रीलंका आदि अन्य सभी छोटे देश शामिल हैं। किसी भी संस्कार को करवाने से पूर्व पुरोहित जम्बुद्वीपे भरत खण्डे आर्यवृतदेशान्तर्गते बोल कर हमारे अखण्ड भारत राष्ट्र की सीमाओं को परिभाषित करता है। पूर्ण स्वाधीनता के प्रथम उद्घोष के साथ देव दयानन्द ने अखण्ड स्वाधीन भारत की परिकल्पना की। कई इतिहास कारों ने स्वाधीनता के इतिहास को लिखते समय स्वीकार किया कि स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले स्वाधीनता सेनानी आर्य समाज की विचारधारा और कालजयी ग्रन्थ क्रन्तिकारियों की गीता सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ कर दी। इसकी वर्तमान परिकल्पना वीर सावरकर ने अपनी पुस्तक में की।आज यदि हम राष्ट्र वन्दना करना चाहते हैं तो हमें अखण्ड भारत का संकल्प लेना होगा। मुख्य अतिथि जितेंद्र चावला (निदेशक विजय हाई स्कूल सोनीपत) व अध्यक्ष डॉ.गजराजसिंह आर्य (प्रधानाचार्य, श्रद्धा मन्दिर स्कूल फरीदाबाद) ने कहा कि राष्ट्र वंदना यानी राष्ट्र के लिए जीना व राष्ट्र के लिए मरना। नयी पीढ़ी में राष्ट्र भक्ति की भावना भरने पर जोर दिया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने आह्वान किया कि जिस मिट्टी में हम खा पीकर बड़े हुए हैं उसके प्रति निष्ठावान रहना ही कर्तव्य है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि आर्य समाज राष्ट्र वादी विचारों का प्रसारक है। गायिका कुसुम भंडारी, प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, सुदर्शन चौधरी, शोभा बत्रा, कमला हंस, कमलेश चांदना, ईश्वर देवी, सरला बजाज, संतोष सांची, रजनी गर्ग रजनी चुघ, जनक अरोड़ा आदि के मधुर भजन हुए।

आर्य समाज जानीपुर जम्मू में युवा संस्कार समारोह संपन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में युवा संस्कार समारोह संपन्न हुआ जिसमें 150 बच्चों ने यज्ञोपवित धारण किया। प्रदेश अध्यक्ष श्री सुभाष बब्बर ने कुशल संचालन किया। आचार्य सत्यप्रिय आर्य, रमेश खजूरीया , कपिल बब्बर, मुकेश मैनी, रूही बब्बर आदि उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि

स्व० श्री कृष्णलाल जी सहगल

यादों का तहखाना था, मै नींद में और मुझे इतना सजाया जा रहा था
बड़े प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था, था पास मेरा हर अपना उस वक्त
फिर भी मैं हर किसी के मन से भुलाया जा रहा था।
जो कभी देखते भी न थे मोहब्बत की निगाहों से
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर लुटाया जा रहा था।
मालूम नहीं क्यों हैरान था?
हर कोई मुझे सोते देख कर जोर–जोर से रोकर मुझे जगाये जा रहा था।

डॉ. साहब हमेशा यही कहते थे कि जिंदगी की सच्चाई यही है पर दुःख इस बात का है कि हमने कभी यह नहीं सोचा था कि डॉ. साहब को अपनी जिंदगी की सच्चाई का सामना अन्त रूप में 20 जुलाई, 2022 को इतनी जल्दी करना पड़ेगा। मेरी रूह तो यह देखकर हैरान रह गई कि डॉ. साहब बीस दिन अस्पताल में रहने के बाद भी पूरी चेतना में थे और उनका मस्तिष्क पूर्ण प्रताप से भरपूर था। वे अंतिम समय तक पूरे परिवार से अपने पूरे होश में बातें कर रहे थे मानो कोई दिव्य शक्ति स्वयं उनको सहारा दे रही हो। डॉ. साहब का जन्म 1946 में पश्चिमी पंजाब में हुआ था। बचपन इतना खुशहाली से संपन्न नहीं था क्योंकि दुर्भाग्यवश 1947 आजादी के साथ–साथ भारत का बँटवारा भी हुआ था। इस बँटवारे में पश्चिमी पंजाब के लोगों पर बहुत कहर ढाए गए। मुझे याद आता है कि डॉ. साहब बताया करते थे कि जब मैं एक साल का था तो दूध के लिए रो रहा था तब मेरे बाबा दूध लेने के लिए गलती से पाकिस्तानियों के टेंट में चले गए जहाँ पर वो लोग अपना छुरा तेज कर रहे थे तो बाबा को देखकर वे उनके पीछे दौड़ने लगे। बाबा ने बड़ी मुश्किल से अपने प्राण बचाए। इससे बड़ी आसानी से इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि उस बच्चे का बचपन कैसा होगा जिसने अपने जीवन का स्वर्णिम काल शरणार्थी टेंट में बिताया। लेकिन डॉ. साहब ने कभी अपने जीवन की कठिनाइयों को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उन्होंने महाराष्ट्र के सरकारी स्कूलों में अपनी शिक्षा प्राप्त करने के बाद हरियाणा जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने का निर्णय लिया। यह उस जमाने में एक क्रांतिकारी निर्णय था। डॉ. साहब अपने सभी बहन भाइयों में सबसे छोटे थे तो इसलिए सबसे ज्यादा प्यार भी उनके हिस्से में आता था। इसलिए परिवार को समझाकर दूसरे प्रदेश में पढ़ने जाने के लिए डॉ. साहब को बड़ी मेहनत करनी पड़ी।

फिर डॉ. साहब ने पूरा मन लगाकर आयुर्वेद में उच्च शिक्षा प्राप्त की और एक कुशल वैद्य के रूप में छवि बनाई। उन्होंने अपनी फार्मेसी में बनी आयुर्वेदिक औषधियों से कितने लोगों के शरीर में स्फूर्ति का संचार किया। इतनी सफलता प्राप्त करने के बाद भी डॉ. साहब को कभी लालच और घमंड ने नहीं छुआ। एक बार की बात है डॉ. साहब दवाखाने में बैठे थे और एक गरीब महिला अपने बच्चे के लिए दवाई लेने आई पर वो इतनी महंगी दवा खरीदने में सक्षम नहीं थी तब भी डॉ. साहब ने वह दवा उसी महंगी सामग्री से बनवाकर उस महिला को निःशुल्क दी। उन्होंने कई औषधालयों में निःशुल्क सेवाएँ जीवनभर दी। डॉ. साहब ने डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा व आर्य समाज की अन्य शाखाओं में अनेक पदों पर रहते हुए निःशुल्क सेवाएं दी और समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया। डॉ. साहब पर तमाम उम्र प्रभु आश्रित जी महाराज, योगेश्वरानन्द सरस्वती जी, दीक्षानंद सरस्वती जी, महात्मा आनंद स्वामी, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी (मेरठ) व अन्य साधु सन्यासियों की कृपा बनी रही। डॉ. साहब को यज्ञ का जो संकल्प प्रभु आश्रित जी महाराज ने यज्ञोपवीत के दौरान दिलाया था, आज भी पूरा परिवार उस संकल्प के प्रति पूर्ण समर्पित है। डॉ. साहब के जाने के पश्चात् उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुलभा सहगल, उनके सुपुत्र श्री यशपाल आर्य, श्री मनीष सहगल और उनकी सुपुत्री श्रीमती शिवानी सागर उनके बताए हुए मार्ग पर चलने का पूर्ण प्रयास कर रहे है। उनका भरा–पूरा शोकाग्रस्त परिवार इस शोक से निकलने के लिए प्रयत्नवान है परन्तु यह इतना सरल कार्य नहीं है। डॉ. कृष्ण लाल सहगल जी के जीवन के आधार पर लिखी ये पंक्तियां कोई अतिश्योक्ति नहीं होंगी–

हजारों बरस नरगिस अपनी बेनरी पर रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है, चमन में दीदावर पैदा।

– सहगल परिवार की ओर से

इन्द्र!

इन्द्र अर्थात् सभी ज्ञान व कर्म इन्द्रियों का स्वामी, ऐश्वर्यवान प्रजा पालक देवता और उसपर लांछन क्या लगा, अहिल्या के साथ धोखा घड़ी करने का। अहिलया अर्थात् जिसे कोई हिला न सकता हो। किससे, अपने पतिव्रत धर्म से। यहाँ एक साथ दो–दो इन्द्रिय जीतों को लांछित किया गया और पूरा का पूरा सनातन समाज ने विरोध करने, उसमें सुधर करने की बजाय, सहज स्वीकार ही नहीं किया, बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों को बता भी रहे है। पढ़ा भी रहे है। इतना ही नहीं, ऐसे कपटी इन्द्र को पूज्य भी रहे हैं। कैसा अजीव विरोधाभास है। या हमारा कायराना व्यवहार है। इन्द्र तो भगवान हैं। उनका विरोध करने की किसी ने हिम्मत नहीं की। अहिल्या को श्राप दे दिया। क्या यह सही है? या कोई बड़ा झोल झपाटा है। जिससे दो इन्द्रियजितों के चरित्र हनन के साथ ही, पूरे सनातन समाज को बताया गया, कि तुम्हारे तो देवता ही चरित्रहीन है। तो तुम क्या हो? मुझे लगता है। पराधीनता के समय में धर्मगन्थों के साथ छेड़–छाड़ हुई है। विद्वान लोग विचार करें और जहाँ इस तरह की गड़वड़ियाँ है। उन्हें सुधार कर, अपने ग्रंथों को ठीक से आमजन के सामने प्रस्तुत करें। देश और समाज का कल्याण होगा।

कृपया अपनी प्रिय पत्रिका "युवा उद्घोष" को नियमित बनाये रखने के लिये केवल 100/– रू का सहयोग "युवा उदघोष, A/N0. 20024363377, IFSCode. MAHB0000901, बैंक आफ महाराष्ट्र, डा. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009 पर आनलाईन भेजें।

'मृत्यु रहस्य' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सोमवार 12 सितम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'मृत्यु रहस्य' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 442 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने मृत्यु की संक्षिप्त विवेचना करते हुए कहा कि मृत्यु लम्बे काल से समाज के सामान्य जनों में एक पहेली जैसी रही है। इसका कारण भी यही है कि आर्यावर्त्त के लोगों ने वेद और अन्य आर्ष ग्रंथों का अध्ययन बहुत कम कर दिया। इस कारण से लोगों में अनेक भ्रान्तियां उत्पन्न हो गयीं। मृत्यु आत्मा के अनंत जीवन प्रवाह में केवल एक पड़ाव है,जिसमें उसके साथ भौतिक शरीर नहीं रहता। उन्होंने मृत्यु का कारण बताते हुए सर्वज्ञ परमेश्वर की संपूर्ण और त्रुटिहीन व्यवस्था की ओर संकेत किया। यजुर्वेद और अथर्ववेद से उद्धरित मन्त्र और उनकी व्याख्या प्रस्तुत करते हुए मृत्यु के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। मृत्यु के बाद जीवात्मा का प्रवास और उसकी गति की चर्चा की। मन्त्रों के आधार पर यह समझाने का प्रयास किया कि योग, तप और यज्ञ द्वारा कैसे दीर्घायु प्राप्त की जा सकती है और मृत्यु को कैसे आगे धकेला जा सकता है। बृहदारण्यक उपनिषद के आधार पर मृत्यु का कारण प्रकट किया। जीवात्मा के पांच क्लेश, तीन अवस्थाएं और तीन शक्तियों के बारे में बताया। मृत्यु पर प्राणी के कौन से तत्व जीवात्मा के साथ शरीर छोड़ते हैं – इसकी जानकारी दी। तत्पश्चात वक्ता ने मृत्यु सम्बंधित अन्य 13 महत्वपूर्ण बिंदु व्याख्या सहित प्रस्तुत किये। आयु की वृद्धि करने के वैज्ञानिक तथ्यों का खुलासा करते हुए यह बताया कि योग, प्राणायाम और नियंत्रित भोग से कैसे आयु बढ़ाई जा सकती है। मृत्यु के तथ्यों को जानकर मृत्यु भय से मुक्ति मिल जाती है।इसी चर्चा में आगे यह भी बताया कि मनुष्य की औसत आयु तो 100 वर्ष है परन्तु वह वेद विज्ञान और परंपरा के अनुसार चले तो 300 वर्ष तक भी जीवित रह सकता है। जाति, आयु और भोग मृत्यु के बाद कैसा मिलेगा – यह वर्तमान जन्म में जाति, आयु और भोग सम्बंधित कर्मों पर निर्भर करता है। मृत्युंजय शब्द की व्याख्या करते हुए इस तथ्य को प्रकट किया कि इच्छाएं और वासनायें पुनर्जन्म देती हैं और जाति, आयु व भोग कर्मानुसार मिलते हैं। निस्वार्थ, निष्काम परोपकारी कर्म और धर्माचरण को मोक्ष का साधन बताया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष अनिल आर्य ने संचालन करते हुए कहा कि मृत्यु एक उत्सव है थके हारे व्यक्ति को विश्राम देती है। मुख्य अतिथि आर्य नेता महेन्द्र नागपाल व अध्यक्ष राज सरदाना ने भी म्रत्यु को मित्र बताया और कहा आने के साथ जाने का संबंध है जुड़ा हुआ,रात्रि के साथ जिस तरह रहता है दिन बंधा हुआ। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि स्वांस निश्चित हैं योग में प्राणायाम द्वारा स्वांसों को दीर्घ किया जा सकता है गहरे लम्बे स्वांस लेने से स्वांस का खर्च घट जाता है,जब खर्च घटता है तो बचत शुरू होती है यही बचत आयु में प्लस हो जाती है और आयु बढ़ जाती है।

आर्य समाज भलस्वा व मित्र संगम की कवि गोष्ठी सम्पन्न

आर्य समाज भलस्वा दिल्ली में श्री नंद लाल शास्त्री के कुशल नेतृत्व में युवा संस्कार उत्सव संपन्न हुआ। श्री ओम प्रकाश सपरा, अनिल आर्य ने भी संबोधित किया। द्वितीय चित्र–मित्र संगम पत्रिका के तत्वावधान में कवि गोष्ठी का आयोजन लिटिल फेरी स्कूल ओट्राम लाइन दिल्ली में किया गया इस अवसर पर श्री अनिल आर्य का अभिनंदन करते संयोजक ओम प्रकाश सपरा, डॉ .जे सी बत्रा आदि।

आर्य समाज डेरावल नगर दिल्ली में अमृत महोत्सव व श्रुति सेतिया का अभिनंदन

आर्य समाज डेरावल नगर दिल्ली में अमृत महोत्सव संपन्न हुआ, परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने उद्बोधन दिया व अविनाश चुग ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। द्वितीय चित्र में श्रुति सेतिया का अभिनन्दन करते हुए अनिल आर्य।

आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग का उत्सव व धर्मपाल कुकरेजा का अभिनंदन

आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग दिल्ली का वेद प्रचार सप्ताह सोल्लास संपन्न हुआ चित्र में अनिल आर्य व प्रधान रवि चड्डा जी। द्वितीय चित्र मे आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार दिल्ली में प्रधान श्री धर्मपाल कुकरेजा का अभिनंदन करते अनिल आर्य, एस.के. छतवाल, पी एस दहिया, अनिल कपूर, जसवंत शास्त्री जी

'राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका' पर गोष्ठी सम्पन्न

राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण शिक्षक ही करता है –श्रुति सेतिया योगाचार्य

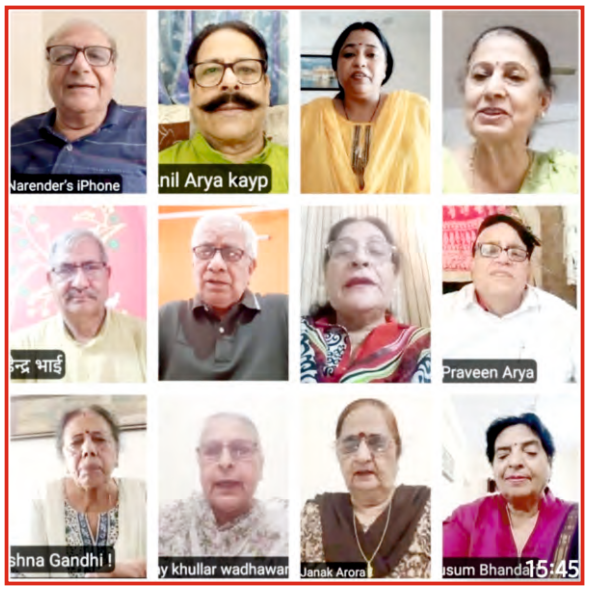

सोमवार 5 सितम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान 'राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका' पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 439 वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता योगाचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि हर व्यक्ति के निर्माण में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षक की होती है, अगर शिक्षक सही शिक्षा विद्यार्थी की दें तो वह महानता को छू लेगा और राष्ट्र व संस्कृति के प्रति जागरूक रहेगा। आचार्य चाणक्य के अनुसार– शिक्षक गौरव घोषित कब होगा जब यह राष्ट्र गौरवशाली होगा और यह राष्ट्र गौरवशाली तब होगा जब यह राष्ट्र अपने जीवन मूल्यों और परंपराओं का निर्वाह करने में सफल एवं सक्षम होगा और यह राष्ट्र सफल एवं सक्षम तब होगा जब शिक्षक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में सफल होगा और शिक्षक सफल तब कहा जाएगा जब वह राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने में सफल हो। हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के साथ आधुनिक शिक्षा प्रणाली की तुलना करेंगे तो दोनों के बीच बहुत बड़ी खाई दिखाई पड़ेगी। गुरुकुल में प्रत्येक विद्यार्थी नैतिक शिक्षा प्राप्त करता था। प्रत्येक विद्यार्थी में विनम्रता ,आत्म संयम ,आज्ञा पालन, सेवा और त्याग भावना सद– व्यवहार, सज्जनता , शिष्टता तथा अनंत बल्कि अत्यंत प्रमुख रूप से आत्मज्ञान की जिज्ञासा रहती थी। आधुनिक प्रणाली में शिक्षा का नैतिक पक्ष सम्पूर्णतः भुला दिया गया है। विद्यार्थी को सदाचार के मार्ग में प्रशिक्षित करने और उसका चरित्र सही ढंग से मोड़ने के लिए शिक्षक को स्वयंपूर्ण सदाचारी और पवित्र होना चाहिए। उसमें पूर्णता होनी चाहिए शिक्षक वृत्ति अपनाने से पहले प्रत्येक शिक्षक को शिक्षा के प्रति अपनी स्थिति की पूरी जिम्मेदारी जान लेनी चाहिए। संसार का भावी भाग्य पूर्णता शिक्षकों और विद्यार्थियों पर निर्भर है। यदि शिक्षक अपने विद्यार्थियों को ठीक ढंग से सही दिशा में धार्मिक वृत्ति में शिक्षा दें तो संसार में अच्छे नागरिक , योगी और जीवन मुक्त भर जाएंगे, जो सर्वत्र प्रकाश, शांति ,सुख और आनंद बिखेर देंगे। केन्द्रीय आर्य युवक युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि डॉ. राधाकृष्णन जी की 134 वी जयंती पर शिक्षक दिवस मनाया जा रहा है क्योंकि समाज की भावी संरचना की नींव शिक्षक ही रखते हैं। मुख्य अतिथि शिक्षाविद सावित्री चावला(पूर्व प्रधानाचार्य डी.ए.वी स्कूल) व अध्यक्ष श्रेष्ठा शर्मा (पूर्व शिक्षा अधिकारी डी.ए.वी), कृष्णा मुखी ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि शिक्षकों को भी अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। गायक रविन्द्र गुप्ता, नरेन्द्र आर्य सुमन (अमेरिका), प्रवीना ठक्कर, कृष्णा गांधी, कमलेश चांदना, ईश्वर देवी, सुदर्शन चौधरी, जनक अरोड़ा आदि के मधुर भजन प्रस्तुत किये।

'निराला दयानन्द एक साँस्कृतिक देवदूत' पर गोष्ठी सम्पन्न

'महर्षि दयानन्द ने ईश्वर व वेदों का सच्चा स्वरूप बताया –आचार्य हरिओम शास्त्री'

'महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के अग्रदूत थे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य'

शुक्रवार 09 सितम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'निराला दयानन्द एक साँस्कृतिक देव दूत' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 441वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य हरिओम शास्त्री (फरीदाबाद) ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने ईश्वर की व वेदों की सही व्याख्या की उसके सही स्वरूप से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि कविरत्न पंडित प्रकाश चन्द्र जी ने गाया था –कोई गिनले दुनिया के ज़र्रे या गिनले चांद सितारों को।पर कौन गिनेगा दयानन्द के उन अगणित उपकारों को।महर्षि दयानंद सरस्वती वास्तव में निराले महामानव थे जिन्होंने दुनिया को सन्मार्ग दर्शन के लिए वेदों की राह पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने संसार में ईश्वर के विषय में वेदों और वैदिक आप्त ग्रन्थों में वर्णित स्वरूप को मानने की प्रेरणा दी। वैदिक संस्कृति कहती है कि 'एकं सद्विप्रारू बहुधा वदन्ति' अर्थात् एक ही ईश्वर को विद्वान लोग अनेकानेक गुण,कर्म और स्वभाव के कारण अनेक नामों से जानते हैं। वही ब्रह्मा,विष्णु और महेश, मित्र,वरुण,हिरण्यगर्भ,वायु, तैजस और जल आदि नामों से जाना जाता है। ईश्वर के एक सौ नामों का वर्णन करते हुए ऋषिवर ने प्रथम ही स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर के विषय में वेदों का आश्रय लेकर ही स्पष्ट और आसानी से जाना जा सकता है। उसके बाद उन्होंने वेदों की स्वयं प्रमाणिकता को सिद्ध करते हुए कहा कि वेद परम प्रमाण हैं। क्योंकि सृष्टि की आदि में वेदों का प्रकाश अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा आदि चार ऋषियों के माध्यम से परमेश्वर ने ही मानव मात्र का कल्याण करने के लिए किया है अतः किसी भी मानव रचित ग्रंथ से वेदों की प्रमाणिकता सिद्ध नहीं की जा सकती हैं बल्कि वेदों के आधार पर ही इन बाद के समस्त ग्रन्थों की प्रमाणिकता स्वीकार की जा सकती है अर्थात् जो ग्रन्थ वेद विचाराधारित हैं वे प्रमाणिक और उसके विपरीत सब अप्रमाणिक हैं। अतः सभी को वेदानुकूल आचरण ही करने में भलाई है और उसके विरुद्ध आचरण से विनाश है। उन्होंने इसी प्रकार वेदान्तमत, अवतारवाद, वाममार्ग, चार्वाक दर्शन, ईसाई और इस्लाम मतों का भी खंडन किया है। भारतवर्ष में महाभारत काल के पश्चात् इतनी दृढ़ता से वेदों को सर्वोपरि मानकर अपनी बात कहने और समस्त मनुष्यकृत ग्रन्थों को वेदानुकूल होने पर प्रमाणिक मानने वाले दयानंद ऋषि वास्तव में निराले दयानन्द ही थे। इसी प्रकार राजनीति के शुद्धिकरण और संस्कृति तथा परिवार निर्माण कार्य हेतु वेदाधारित सांस्कृतिक संदेश देने वाले दयानंद सरस्वती वास्तव में निराले ही थे। अतः किसी कवि ने ठीक कहा है –– **'वेद की अनूठी बूटी लेके दयानंद तूने।' 'एते जन तारे जेते नभ में न तारे हों।।'**

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत थे उन्होंने लोगों के सोचने की विचार शक्ति की दिशा ही बदल डाली। मुख्य अतिथि शिक्षाविद जगदीश पाहुजा व अध्यक्ष आर्य नेता लक्ष्मण पाहुजा ने भी महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने ऑनलाइन उपस्थित श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, कुसुम भंडारी,कमला हंस, विजय खुल्लर,सुदर्शन चौधरी, शोभा बत्रा,रविन्द्र गुप्ता,कौशल्या अरोरा, सन्तोष सांची,जनक अरोरा, नरेश प्रसाद आर्य ने भजन प्रस्तुत किए।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970